Q. No. 08

Explain deferent Courses of growth of public expenditure in current times.

आधुनिक समय से सार्वजनिक व्यय में अत्यधिक वृद्धि के कौन–कौन से कारण है?

Ans:- प्रारम्भ में classical अर्थशास्त्रियों ने सरकार के न्यूनतम आर्थिक क्रियाओं का समर्थन किया। उसके अनुसार प्रत्येक सार्वजनिक व्यय अन– उत्पादक होते हैं, एवं प्रत्येक कर एक अभिशाप होता है। इसलिए सरकार को कम से कम कर लगाना चाहिए एवं से कम से कम व्यय करना चाहिए लेकिन आधुनिक समय में विश्व का अधिकांश देश कल्याणकारी राज्य है। कल्याणकारी राज्य होने के कारण सामाजिक कल्याण में वृद्धि करना राज्य का प्रमुख कार्य है। लोगों के सामाजिक कल्याण में वृद्धि करने के लिए सरकार को सार्वजनिक व्यय में अत्यधिक वृद्धि करनी पड़ती हैं।

DALTAN के अनुसार – अन्य क्षेत्रों में आधुनिक विकास ने जनसेवाओं को नए कार्य अपनाने को बाध्य कर दिया है, जो कि वास्तव में निजि साधनों द्वारा पूर्ण नहीं किय जा सकते थे।

आधुनिक समय में सार्वजनिक व्यय में वृद्धि के निम्नलिखित कारण है।

PC = Ø =(EF,SF PF,OF)

सार्वजनिक व्यय मुख्यतः आर्थिक तत्व सामाजिक तत्व राजनैतिक तत्व एवं अन्य तत्वों पर निर्भर करता हैं।

ECONOMIC FACTORES

$$\frac{dP_e}{dE_f} > 0$$

आर्थिक क्रियाओं में वृद्धि होने के कारण राज्य के सार्वजनिक व्यय में वृद्धि होती है आर्थिक तत्व के अन्तर्गत निम्नलिखित कारण है।

1. आय में वृद्धि :– लोगों के आय में वृद्धि होने के कारण सब लोक व्यय में वृद्धि होती है। तथा लोक व्यय में वृद्धि होने से प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है प्रतिव्यक्ति आय बढ़ाने से निजि एवं ''समाजिक वस्तुओं के मिश्रण में ऐसा परिवर्तन होता है। कि उसमें समाजिक वस्तुओं का अनुपात बढ़ता है। प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि के साथ राष्ट्रीय आय में कृषि क्षेत्र का योगदान घटता है एवं औद्योगिक क्षेत्र का योगदान बढ़ता है परिणामस्वरूप लोकव्यय की आय लोच एक से अधिक हो जाती है।

$$\frac{EP_c}{Ey} = \frac{dP_e y}{dy P_e} > 1$$

अर्थात आय के अपेक्षा लोकव्यय में अधिक अनुपात में या तेजी से वृद्धि होती है, उपयोक्ता वस्तुओं के सम्बंध में Engel का उपयोग का नियम क्रियाशील होता है अर्थात् आय में वृद्धि के फलस्वरूप प्रत्येक परिवार खाधानों में अपेक्षाकृत कम अनुपात में काम करते है। आय में वृद्धि के साथ समाजिक विलास की वस्तुओं की मांग अधिक तेजी से बढ़ती है। अतः आय बढ़ने से सरकार की समाजिक आवश्यक वस्तुएँ समाजिक विकास की वस्तुएँ एवं पूँजीगत समाजिक वस्तुओं की माँग में वृद्धि होती है। अतः इसपर सरकार को बड़ी रकम व्यय करना पड़ता है, चूंकि उनसे प्राप्त अधिकांश लाभ बाध्य लाभ होते है। अतः इनकी व्यवस्था सरकार को ही करनी पड़ती हैं।

2. उद्योगों की स्थापना : → बडे उद्योगों की स्थापना समान्यतः निजि व्यक्तियों द्वारा एवं विकसित तकनीक की आश्यकता होती है तथा ऐसे उद्योगों का उत्पादन प्रारम्भ होने में अधिक समय लग जाता है। लेकिन देश के औद्योगिक विकास के लिय बडे उद्योगों की स्थापना आवश्यक होती है। अतः इसपर सरकार को बड़ी रकम व्यय करना पडता है। दूसरी ओर 'महत्वपूर्ण उद्योगों के सब राश्ट्रीकरण करने से भी उद्योगपतियों को क्षतिपूर्ति के रूप में बड़ी रकम देनी पड़ती है।

3. आर्थिक स्थाइत्व (Economic Stability)– अर्यव्यवस्था में जब बचत अधिक होता है तो आयु वृद्धि की प्रति प्रक्रिया धीमी हो जाती है, जिससे अर्थव्यवस्था में मन्दी आने की ''सम्भावना रहती हैं।

$$K = \frac{1}{1-c} = \frac{1}{S}$$

अतः अर्थव्यवस्था को मंदी से बचाने के लिय सरकार को विनियोग में वृद्धि करना आवश्यक होता है, तभी अर्थ व्यवस्था में स्थाइत्व बना रहेगा।

4. आर्थिक सहायता (Economic help) → 'सरकार उत्पादकों को उत्पादन बढ़ाने के लिए ऋण आर्थिक सहायता एवं कर में छुट आदि प्रोत्साहन देती है। इसके लिए सरकार को वडी रकम व्यय करना पड़ता हैं। बहुत से विकसित देश 'विकासशील देशों को आर्थिक सहायता पर बड़ा रकम व्यय करता है। 1992–93 के बाद बजट में भारत सरकार ने अन्य देशों को आर्थिक सहायता के मद में 190 करोड. रु. का प्रावधान किया है।

5. विकास योजनाएँ (Deveolopment Plans):– प्रत्येक देश अपने देश के लिए आर्थिक विकास को योजनाएँ बनाता है। इन योजनाओं के निर्माण एवं कार्यान्वयन पर सरकार बड़ी रकम व्यय करती है। प्रथम पंचवी पंचवर्षीय योजना में सरकार 1960 रु० करोड व्यय किया जो बढ़कर सौतवी योजना में 180000 करोड़, हो गया। 1991–92 में भारत का आयोजन व्यय 33032 करोड़ रुपए थे जो बढ़कर 1992–93 में ''दिया गया।'' 34612 करोड़ कर दिया गया।

6. मूल्य वृद्धि (Rise in price) :– भारत में तीव्र गति से मूल्य में वृद्धि के कारण योजनाओं के कार्यान्वयन पर सरकार को अधिक व्यय करना पड़ता है। वर्तमान समय में भारत में मुद्रा स्फीर्ति की दर 13 प्रति ात है। अतः सभी योजनाओं पर 13 प्रति ात व्यय वृद्धि होगी।

SOCIAL FACTORES

7. **जनसंख्या में वृद्धि** : → विश्व के अधिकांश देशों में जनसंख्या में वृद्धि हो रही है। जनसंख्या में वृद्धि होने से सरकार को अधिक अनाज, अधिक वस्त्र, अधिक आवास की सुविधाएं आदि उपलब्ध करानी पड़ती है। इसके. अतिरिक्त शिक्षा एवं स्वस्थ सेवाओं पर भी सार्वजनिक व्यय में वृद्धि होती हैं।

8. सामाजिक सुरक्षा सेवाएँ (Social Security Services) :– कल्याणकारी राज्यों में सरकार न्युनतम मजदूरी प्रो. मिङन्ड फण्ड एवं अन्य सुविधाएं उपलब्ध करानी पड़ती है। उसके लिए सरकार को अनेक विभागों का निर्माण करना पड़ता है। जैसे– श्रम विभाग, कारखाना निरिक्षालय आदि। इन विभागों पर सरकार को बड़ी रकम व्यय करनी पड़ती हैं।

9. स्थानीय समस्याएं (Local Problems)- जनसंख्या में वृद्धि होने से दैनिक समस्याओं में वृद्धि होती है इन समस्याओं के समाधान के लिए सरकार को अतिरिक्त योजनाओं, प्रखण्ड, अनुमण्डल एवं जिलों का निर्माण करना पडता है, इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय विकास प्राधिकार की स्थापना करनी पडती है, जिस पर सरकार को बड़ी रकम व्यय करना पड़ता है।

(C) POLICAL FACTORES

10. कल्याणकारी राज्य :– आधुनिक समय में पुलिस राज्य के स्थान पर अधिकांश देशों में कल्याणकारी राज्यों की स्थापना की है। इसके अन्तर्गत सामाजिक कल्याण में वृद्धि करने के लिए सरकार को बड़ी रकम व्यय करनी पड़ती है।

11. प्रजातान्त्रिक आधार (Demderotse Base)- प्रजातन्त्र के अन्तर्गत अधिकांश देशों में एक निश्चित समय पर चुनने के लिए निर्वाचन की व्यवस्था करनी पड़ती है। जिस पर सरकार को बड़ी रकम व्यय करनी पड़ती है। दुसरी ओर इस जन प्रतिनिधियों एवं मंत्रियों के पीछे भी सरकार को वहीं रकम व्यय करनी पड़ती हैं।

12. सुरक्षा पर व्यय PEACock WISEMAN HYPOTHESIS- के अनुसार युद्धकाल में सरकार के द्वारा लगाए गये अधिकांश कर युद्धोतंर काल मे वापस नहीं लिया जाता है। जिससे सरकार के आय एवं व्यय में स्थाई वृद्धि होती है इसे उन्होने Displacement effect (विस्थापन प्रभाव) कहा है। इस प्रकार के सार्वजनिक जय में स्थीर वृद्धि नहीं छोटी बलकी अनियमित रूप से वृद्धि होती है। इसके रेखा चित्र में Jump होता हैं।

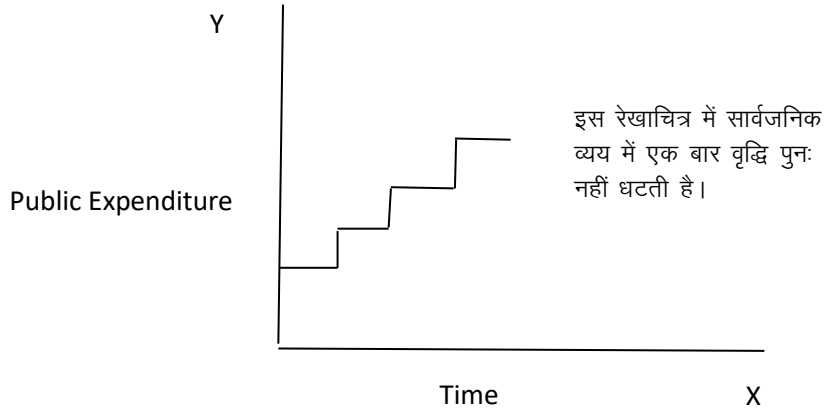

MUSGRAVE ने अपनी पुस्तक FISCAL SYSTEM में इस बात को विस्तार से विश्लेषण किया है कि युद्धकाल में आकस्मिक लोकव्यय में वृद्धि के पश्चात् युद्धोतर काल में इसकी प्रवृति क्या होगी।

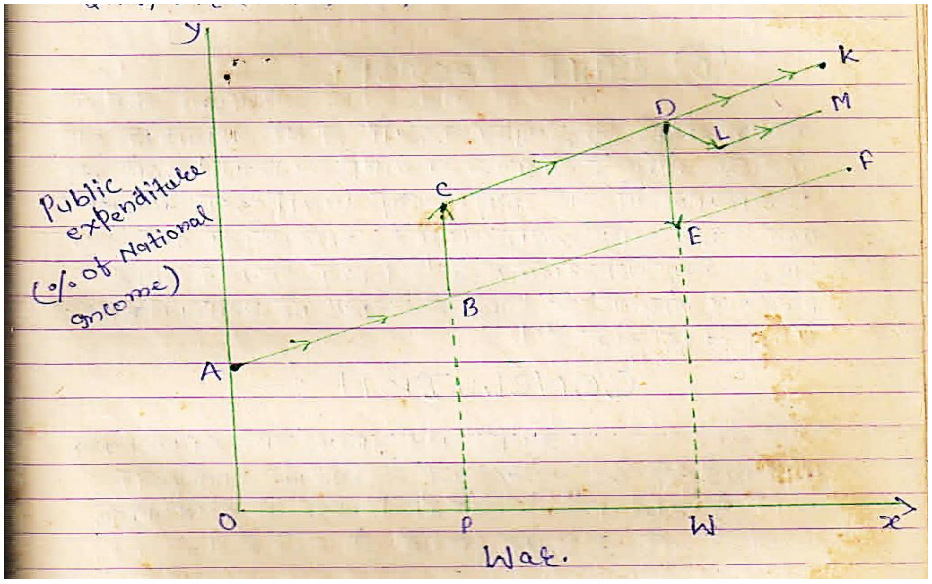

इस रेखा चित्र में x अक्ष पर Op शान्ति काल PW युद्धकाल एवं W के बाद युद्धोत्तर काल प्रदर्शित किया गया है। शान्ति कालीन सार्वजनिक व्यय की रेखा AB है जो युद्धकाल में बढ़कर CD हो जाता है। युद्धोत्तर काल में MUSGRAVE के अनुसार तीन सम्भावनाएं है: युद्धकाल में तक पहुँचा हुआ सार्वजनिक व्यय E विन्दु पर पहुँच कर अपने प्रारम्भिक राह EF ग्रहण करले जब विस्थापन प्रभाव की अनुपस्थिति होगी। दूसरी ओर विस्थापन प्रभाव की उपस्थिति में लोक व्यय युद्धकालीन स्तर पर ही वृद्धि DK के अनुसार हो। तीसरी और विस्थापन प्रभाव की उपस्थिति में यह थी। सम्भव है कि लोकव्यय की प्रकृति DLM की ओर हो। PEACOCK, WISEMAN अवधारणा उसी सम्भावनाओं को अधिक सही मानती हैं।

OTHER FACTORES

उपयुक्त कारणों के अतिरिक्त कुछ अन्य कारणों से भी सार्वजनिक व्यय में वृद्धि होती है जैसे शरणार्थी समस्या' दुसरे देश के शरणार्थीयों पर कभी–कभी किसी देश को बहुत रकम व्यय करना पड़ता है अधिकांश देश संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य है। विश्व संघ में अनेक विलिय संस्थाएँ हैं। जिन्हें सरकार को प्रशासनीक दक्षता में भी वृद्धि होती हैं।

CONCLUSION :→

इतनी बात सत्य है कि अभी विश्व का कोई भी देश ऐसा नहीं है जिसके सार्वजनिक में वृद्धि नहीं हो रही हो । भारत के सार्वजनिक व्यय में भी लगातार वृद्धि हो रही हैं।